शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2014

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला': व्यक्तित्व और कृतित्व

मधुलता भालावी (शोधार्थी)
बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

हिंदी काव्य भारती के विशाल आंगन में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' अपनी विशेष छवि के साथ उपस्थित हैं। वे निराली प्रतिभा और व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपने जीवन की गहनतम अनुभूतियों को जिस ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान की है, वह अपने आप में अन्यतम है। इसी कारण वे सभी क्षेत्रों में अपना निरालापन आज भी अक्षुण्ण बनाए हुए हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

काव्य को व्यक्तिगत जीवन अनुभूतियों एवं सघन संवेदनाओं से सजाने वाले महान कवि श्री निराला जी का जन्म 1897 को बंगाल के मेदिनीपुर जिले के अंतर्गत महिषादल में हुआ था। वहाँ इनके पिता एक सरकारी कर्मचारी थे। इनके पिता का नाम श्री रामसहाय त्रिपाठी और माता का नाम श्रीमती रुकमनी देवी था। निराला जी का लालन-पालन कठोर अनुशासन में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा बँगला भाषा में हुई। उन्होंने घर पर रहकर संस्कृत, अंगरेजी, उर्दू, फारसी और हिंदी का गहन अध्ययन किया। वे बचपन से ही रामायण की चौपाईयां गा कर पढ़ने लगे थे। हारमोनियम बजाना भी उन्होंने सीख लिया था।

निराला जी का विवाह मनोहरा देवी के साथ हुआ। सन 1914 में निराला जी के यहाँ एक पुत्ररत्न और 1916 में पुत्री सरोज ने जन्म लिया। जब वे सुखद जीवन व्यतीत कर रहे थे तभी 1917 में पिताश्री और 1918 में पत्नी का स्वर्गवास हो गया।

निराला जी कलकत्ता आ गए। वे रामकृष्ण आश्रम से प्रकशित 'समन्वय' में कार्य करने लगे। यहीं पर उन्होंने वेदांत और अध्यात्म दर्शन का गहन अध्ययन किया। 1923 में निराला जी 'मतवाला' नामक पत्र के संपादक मंडल के सदस्य बन गए। इसी पत्र ने अपनी स्वछंदतावादी प्रवृत्तियों के कारण इन्हें 'निराला' उपनाम दिया। इसके बाद वे लखनऊ आकर 'सुधा' पत्रिका का संपादन करने लगे। उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह स्वयं पुरोहित बनकर किया। विवाह के चार-पांच वर्ष बाद ही विधवा हो कर उनकी प्रिय पुत्री का स्वर्गवास हो गया। तब निराला जी टूट गए। इसके बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी। 1936 से 1940 तक उन्होंने हिंदी साहित्य को 'तुलसीदास' और 'राम की शक्ति पूजा' जैसी महत्वपूर्ण प्रबंधात्मक काव्य रचनाएं प्रदान की।

निराला जी के कृतित्व में तीन रूप दिखाई पड़ते हैं : संपादक, गद्यकार, कवि। गद्यकार के रूप में उन्होंने अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा, चोटी पकड़, काले कारनामे और चमेली उपन्यास लिखे। उनके कहानी संकलन हैं: लिल्ली, सखी, सुकुल की बीबी, चातुरी चमार, देवी। रेखा चित्र हैं : कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा।

निराला का सर्वाधिक आकर्षक रूप कवि का है। उनके संग्रह की नाम हैं : परिमल, गीतिका, अनामिका, राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, बेला, नए पत्ते, अर्चना, आराधना, गीत कुञ्ज, सांध्यकालीन। 15 अक्टूबर 1961 को निराला ने महाप्रयाण किया।

विश्लेषण

द्वापर युग में जितना अन्याय कर्ण के साथ हुआ कलियुग में उससे कम शायद महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साथ न हुआ होगा। मात्र तीन वर्ष की आयु में मां का साथ छूट गया। पंडित रामदयाल की पुत्री, सुंदर, सुशिक्षित, संगीत प्रेमी पत्नी मनोहरदेवी भी मात्र 20 वर्ष की आयु में चल बसीं। विधवा पुत्री सरोज के असामयिक निधन में आकुल निराला जी ने अत्यंत मर्मस्पर्शी वेदनापूर्ण सरोज स्मृति में लिखा:

मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
दुख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूं आज जो नहीं कही।

इन्फ्लुएंजा से घर के अन्य साथी भी चल बसे। पिता के असामयिक निधन ने तो उन्हें चूर-चूर कर दिया। वे जीवनपर्यंत आर्थिक विषमताओं से जूझते रहे। शायद इन्ही सब कारणों से जीवन के अपने अंतिम दिनों में वे मनोविक्षिप्त से हो गए थे। और शायद इन्हीं कारणों से उनके काव्य में अतिशय विद्रोह, ओज, स्वच्छंदता, क्रांतिकारी विचार और फक्कड़पन दिखाई देता है। पूंजीवाद का विरोध और सर्वहारा वर्ग के प्रति उनकी सहानुभूति 'कुकुरमुत्ता' रचना से परिलक्षित होती है:

बाग पर उसका जमा था रोबोदाब
वहीं गंदे पर ऊगा देता हुआ बुत्ता
उठाकर सिर शिखर से अकड़कर बोला कुकुरमुत्ता
अबे सुन बे गुलाब, भूल मत जो पाई खुशबू रंगो आब
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट, डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट

शोषितों, गरीबों के प्रति संवेदना उनकी कृति 'वह तोड़ती पत्थर' से भी उभरकर आती है:

वह तोड़ती पत्थर
देखा उसे मैंने इलाहबाद के पथ पर
वह तोड़ती पत्थर
कोई न छायादार पेड़...

बहुमुखी काव्य रचना के धनी निराला जी ने देशप्रेम की रचनाएं भी की हैं:

वर दे वीणावादिनी वर दे,
प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव
भारत में भर दे,
काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष-भेद तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे। वर दे वीणा....

व्यवस्था विरोध और व्यंग्य बाण के तो निराला जी उस्ताद माने जाते हैं:

बापू तुम मुर्गी खाते यदि
तो दया भजते तुमको ऐरे गैरे नत्थू खैरे
सर के बल खड़े हुए होते
हिन्दी इतने लेखक कवि बापू तुम मुर्गी....

निराला जी स्थिर होकर कविता पाठ नहीं करते थे। एक बार एक काव्य समारोह का सीधा प्रसारण आकाशवाणी से होना था। पूरे मंच पर चारों ओर माइक लगाए गए, पता नहीं वे घूम-घूम कर किस कोने से कविता पढ़ें।

भिखारी पर उनकी करुणा प्रधान रचना है:

पेट पीठ दोनों मिलकर एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठीभर दाने को भूख मिटाने को
मुंह फटी पुरानी झोली फैलाता,
दो टूक कलेजे में करता, पछताता...

उनका एक और रंग यौवन के चरम प्रेम के वियोगी स्वरूप को उकेरता है:

छोटे से घर की लघु सीमा में,
बंधे हैं क्षुद्र भाव,
यह सत्य है प्रिये,
प्रेम का पयोधि तो उमड़ता है
सदा ही निःसीम भूमि पर।

एक और रचना है:

रोकटोक से कभी नहीं रुकती है,
यौवन मद की बाढ़ नदी की,
किसे देख झुकती है, गरज गरज वह क्या कहती है,

कहने दो
अपनी इच्छा से प्रबल वेग से बहने दो...।

घूमना, खेलना, तैरना, कुश्ती लड़ना और संगीत में निराला जी की विशेष रुचि थी। स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ टैगोर से प्रभावित निराला जी को अपने समय के साहित्यकारों के एक गुट द्वारा अनवरत अनर्गल आलोचना का सामना करना पड़ा।

निराला से सम्बंधित एक घटना है। एक किसान की बैलगाड़ी एक बड़े सरकारी अधिकारी से टकरा गई। अधिकारी क्रुद्ध होकर चाबुक से किसान को बुरी तरह पीटने लगा। निराला जी से यह अन्याय सहन न हुआ। उन्होंने अधिकारी से चाबुक छुड़ा लिया और लगे अधिकारी को चाबुक से पीटने। निराला इतने संवेदनशील थे।

वे अपनी रायल्टी गरीबों में बांट देते थे। सम्मान में मिली धनराशि और शाल जरूरतमंदों को दे देते। इलाहबाद में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सदैव सहायता करते। अपने जीवनकाल के अंतिम वर्ष उन्होंने इलाहबाद के दारागंज में बिताए। निराला भारतीय संस्कृति के दृष्टा कवि थे। मनुष्य की मुक्ति कर्म बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है। जिस तरह मनुष्य कभी किसी तरह दूसरों के प्रतिकूल आचरण नहीं करता, उसके तमाम कार्य औरों को प्रसन्न करने के लिए होते हैं, फिर भी स्वतंत्र। इसी तरह कविता का भी हाल है। निराला गलत रूढ़ियों के विरोधी तथा संस्कृति के युगानुरूप पक्षों के उद्घाटक और पोषक रहे हैं। पर काव्य तथा जीवन में निरंतर रूढ़ियों का मूलोच्छेद करते हुए अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा।

निष्कर्ष

मध्यम श्रेणी में उत्पन्न होकर परिस्थितियों के घात-प्रतिघात से मोर्चा लेता हुआ, आदर्श के लिए सब कुछ उत्सर्ग करने वाला महापुरुष जिस मानसिक स्थिति को पहुंचा, उसे बहुत से लोग व्यक्तित्व की अपूर्णता कहते हैं। पर जहां व्यक्ति के आदर्शों और सामाजिक हीनताओं में निरंतर संघर्ष हो, वहां व्यक्ति का ऐसी स्थिति में पड़ना स्वाभाविक ही है। हिन्दी की ओर से महाप्राण को यह बलि देनी ही पड़ी। जागृत और उन्नतिशील साहित्य में ऐसी बलियां संभव हुआ करती हैं - प्रतिगामी और उद्देश्यहीन साहित्य में नहीं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 हिंदी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, डॉ.सुरेश अग्रवाल, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली